|  |
| --- |
| 15. September 2024 |
| **24. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Jes 50,5-9a; Zweite Lesung: Jak 2,14-18; Evangelium: Mk 8,27-35 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 461, 1+3+4 | „Mir nach“, spricht Christus |
|  | GL 764, 1+3! | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 5 oder | Herr Jesus, auferstanden |
|  | GL 163, 8 |  |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 116,1-6.8-9 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 629, 3 | Ich gehe meinen Weg |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 143, 3 | Herr, ob den Himmel |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Ich will mich allein des Kreuzes Jesu Christi,* |
|  | *unseres Herrn, rühmen,* |
|  | *durch das mir die Welt gekreuzigt ist und ich der Welt.* |
|  |  |
| Credo: | GL 180, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  | Sprechen |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 275, 1+2 | Selig, wem Christus |
|  | GL 765, 1+2! | Heilger Geist, du Geist der Wahrheit |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes unschuldig |
|  | GL 498, 2 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 270, 1-3 | Kreuz, auf das ich schaue |
|  | GL 297, 1+3+4 | Wir danken dir, Herr Jesu Christ |
|  | GL 479, 3 | Dank dem Vater |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 521, 3+4 | Du Frau aus dem Volke |